

“Resilient Agriculture in Saline Environments Under Changing Climate: International Salinity Webinar held at ICAR-CSSRI, Karnal, Haryana, India

Dated: **03-11-2020**

Soil salinity is one of the widespread challenges in the recent era that hinders global food security and environmental sustainability in the arid and semi-arid regions of the world that severely affects the global agricultural production and livelihoods. Globally, more than 900 million hectares of land, accounting for nearly 20% of the total agricultural land and 33% of the irrigated agricultural lands is affected by salinity. The salt stress in soil and water is becoming prominent due to the ever-increasing global population pressure, intensive agricultural practices and climate change over decades. In the current situation of CORONA pandemic, ICAR-Central Soil Salinity Research Institute (CSSRI) in collaboration with International Centre for Biosaline Agriculture (ICBA) organized an international salinity webinar “*Resilient Agriculture in Saline Environments under Changing Climate*” on November 3, 2020. The webinar was inaugurated by Dr. Trilochan Mohapatra, Director General, ICAR & Secretary DARE, Govt. of India, New Delhi. In his inaugural address, Dr. Trilochan Mohapatra remarked that other than the natural and climate change processes, the over use of irrigation and changing land use patterns are major drivers in bringing cultivable area under salt affected lands. He stressed that major river basins has witnessed the phenomenon of salinity induced stresses caused by over and under irrigation. The current problems, and the practices being followed in salt affected soil regionally and globally, needs a collaborative and inclusive re-look to understand the management policies and practices. Further, Dr. Ismahane Elouafi, DG, International Centre for Biosaline Agriculture, Dubai, in her inaugural remarks stressed upon the current pandemic of COVID that has changed



Dr. Trilochan Mohapatra, DG, ICAR & Secretary DARE, New Delhi

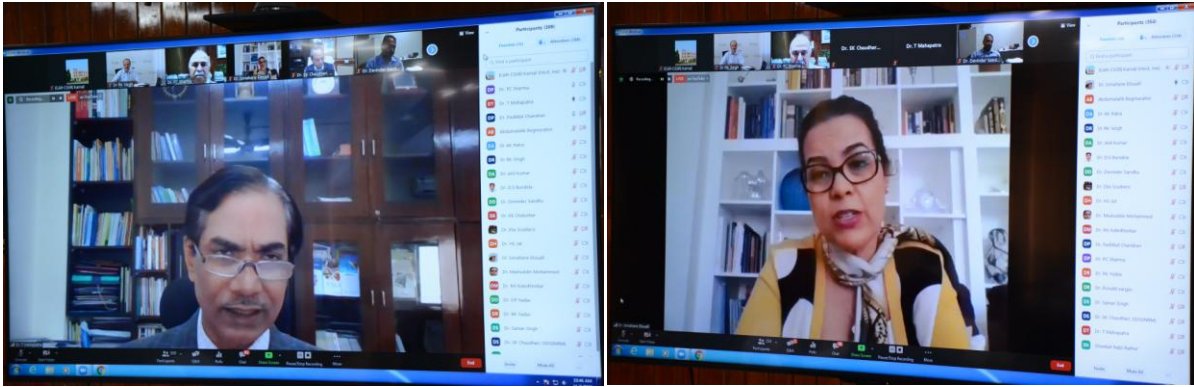


Dr Ismahane Elouafi, DG, International Centre for Biosaline Agriculture, Dubai

the business as usual and compounded natural and man-made factors affecting agriculture in general and salinity in particular in the Asian region. The current situation demands the exploration of underutilized crops in the marginal areas instead of mono-cropping by major food crops so that the resilience can be make a reality. All the eminent speakers from FAO, Rome (Dr. Ronald Vargas), Australia (Dr. M Mainuddin), USA (Dr. Elia Scudiero and Dr. Devinder Sandhu), Dubai (Dr. R. K. Singh) and India (Dr. P. C. Sharma) have covered global status of salt affected soils (SAS) and their mapping and monitoring, genetic characterization for salt tolerance mechanism, crop diversification and sustainable crop management in face of multiple stressors. Dr. S.K. Chaudhari, DDG (NRM), ICAR, New Delhi summarized the deliberations of presenters and highlighted the major issues needed for SAS. He opined to have a need based collaborative programmes and network to take the prioritized issues of SAS at policy and practice levels so as to address them at local and regional scales. Dr. P.C. Sharma, Director, ICAR-CSSRI, Karnal gave an overview of current situations of salt affected soils in India and their sustainable management approaches through various technologies developed by ICAR-CSSRI, Karnal. This international Salinity Webinar was registered by 967 participants and out of that 554 was attendees including 17 panelists. Almost 200 people took advantages of this seminar on live streaming on *YouTube*. The event was ended with the vote of thanks by Dr. H. S. Jat Principal Scientist (Agronomy) and organizing secretary of seminar.

**भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में
अन्तराष्ट्रीय लवणता वेबीनार का आयोजन।**

आज संस्थान में बदलती जलवायु में लवणीय परिस्थिति में लचीली कृषि विषय पर एक अन्तराष्ट्रीय लवणता वेबीनार आयोजित किया गया। यह वेबीनार केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा बायोसेलाईन कृषि के लिये अन्तराष्ट्रीय केन्द्र, दुबई के सहयोग से आयोजित किया गया। इस वेबीनार का उदघाटन डा0 त्रिलोचन महापात्रा, महा निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली तथा सचिव डेयर, भारत सरकार द्वारा किया गया। उन्होने अपने संबोधन में कहा कि प्राकृतिक एवं जलवायु की बदलती हुई प्रक्रिया में अतिरिक्त जल के अधिक प्रयोग व भू प्रयोग के बदलते तरीकों से लवणता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मृदा और जल की लवणीकरण की समस्या के समाधान हेतु अन्तराष्ट्रीय सहयोग द्वारा शोध प्रयासों में वृद्धि करना इस वेबीनार का उद्देश्य है। विश्व में शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों विश्व खाद्य सुरक्षा के लिये मृदा लवणता एक बड़ी चुनौती है क्योंकि इससे उत्पादन में काफी कमी आती है। विश्व में कुल कृषि योग्य भूमि का 20 प्रतिशत व सिंचित भूमि का 33 प्रतिशत हिस्सा 900 मिलियन हैक्टेयर से अधिक लवधता से ग्रस्त है। दशको से बढ़ती जनसंख्या, सघन कृषि पद्धति और जलवायु परिवर्तन द्वारा मृदा व जलों में लवणता में वृद्धि हो रही है।



डा0 इस्महाने एलौफी, महानिदेशक बायोसेलाईन कृषि के लिये अन्तराष्ट्रीय केन्द्र, दुबई ने कहा कि ऐशिया क्षेत्र में कोविड-19 की महामारी ने व्यापार और कृषि विशेषतः लवणता को प्रभावित किया है। वर्तमान समय की मांग है कि एक फसल की जगह बहुत सारी फसलों की खेती की जाए ताकि फसलों में लचीलापन एक वास्तविकता बन पाए।

डा0 एस. के चौधरी उपमहानिदेशक, प्राकृतिक संसाधन प्रबंध, भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली ने लवणग्रस्त मृदाओ से संबंधित मुद्दों पर कहा कि स्थानीय व क्षेत्रीय स्तरों पर नितियों व पद्धतियों की जरूरत है।

डा0 प्रबोधचन्द्र शर्मा, निदेशक केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल भारत ने लवणग्रस्त मृदाओ की वर्तमान स्थिति व प्रबंध समस्याओं को संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों की सहायता से हल करने पर जोर दिया।

इस वेबीनार में आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, दुबई और भारत के प्रमुख वक्ताओं बहु-तनावों के लिये विश्वभर में मृदा लवणता की स्थिति, मानचित्रिकरण, फसल विविधता, लवणसहनशील प्रजातिया और टिकाउ खेती विषयो पर अपने विचार व्यक्त किये। विश्वभर से 554 वैज्ञानिको, शोधकर्ता, तथा 17 वक्ताओं ने इस वेबीनार में सक्रिय रूप से भाग लिया। यू ट्यूब द्वारा लगभग 200 व्यक्तियों ने इस वेबीनार का लाभ उठाया। डा0 एच.एस. जाट, प्रधान वैज्ञानिक व सचिव द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।